"पित्तर"

"जीवत पितर न मानै कोउ । मुए सिराद कराही । पितर भी बपुरे कह किउ पावह कौआ कूकर खाही ।" आत्मा का कल्याण कैसे हो ? कैसे वह समस्त दुखों से ऊपर उठे और वहाँ तक पहुँचे जहाँ दुख या अभाव का कोई सवाल ही सुपने में भी नहीं है । केवल आनन्द का ही सागर इस अंधेरे भयावने दुख-कलेश के सागर में डूबी आत्मा का ही इंतजार कर रहा है । जहाँ इसे केवल सुख-आनन्द ही मिलना है वहीं से ये दूर रहना चाहती

है ! उसी को भूलने का जुर्माना ये बार-2, जब भी इसे मौका मिलता है इस आनन्द के समुंद्र तक पहुँच जाने का "खो" कर चुकाती है । ये स्वयं भी उस आनन्द के सागर की बूँद केवल आनन्द के सिवा ओर क्या हो सकती है । विचारणीय विषय है। शैतानी ताकतें केवल यह इस आनन्द के सागर तक न पहुँच सके रोकने का भरसक प्रयत्न करती रहती हैं, निरन्तर जो अति सूक्ष्म अदृश्य होने के कारण कभी भी जीव को प्रत्यक्ष नजर नहीं आती । कमाई करने वाली आत्मा ही केवल "उस" की दया से इस विरोधी ताकत को धीरे-2 अनुभव करने लगती है । वही केवल अनुभवी आत्मा ही शेष दूसरी आत्माओं का मार्ग-दर्शन करने में समर्थ हो सकती है । जब-2 ऐसी कोई दुर्लभ आत्मा मार्ग दर्शन करती है तो शैतानी जो भूत की तरह पूरे मनुष्य जाति में आई आत्माओं के साथ चिपकी होती हैं, उस दुर्लभ आत्मा के मार्ग में विभिन्न तरह के विघ्न प्रस्तुत करती ही रहती हैं । नानक के बारे में इतिहास साक्षी है -ये कुमार्गी है, इसका संग मत करो, कारण (पूरा ब्राह्मण) जगत पूरब की तरह सूर्य को जल तर्पण किया करता है तो ये नानक नाम की आत्मा पश्चिम की तरफ तल तर्पण करती है । जब पूछा जाता है कि तुम पूरब में किस को जल दे रहे हो, तो जबाब मिलता है सूर्य-पितर इत्यादि को । तो फिर पूछते हैं कि वे यहाँ से कितनी दूर हैं तो जवाब मिलता है कि लाखों करोड़ों मील दूर है । अब ब्राह्मण जगत पूछता है कि तुम

पश्चिम की तरफ उल्टा किसे जल तर्पण कर रहे हो तो नानक नाम की आत्मा जबाब देती है कि मेरा गाँव तलवंडी इस तरफ है, पूछने लगे कि वो यहाँ से कितना दूर है, तो कहने लगे कि चार-पाँच सौ कौस के करीब होगा । तक सभी ब्राह्मण जगत हँसने लगा और कहने लगा कि मूर्ख तेरा ये जल वहाँ तेरे खेतों तक कैसे पहुँच जायेगा । तेरी खेती तो अवश्य ही सूख जायेगी। तब नानक जी ने जबाब दिया कि अगर आप का ये जल लाखों-करोड़ो मील दूर आप के पितरों को संतुष्ट अथवा तृप्त कर सकता है तो क्या मेरा ये जल केवल ४-५ सौ कौस दूर खेतों को हरा क्यों नहीं कर सकता ? इसका पूरे ब्राह्मण जगत के पास कोई जवाब नहीं था । अब शैतानी ताकतें तो मानती नहीं सभी धन्धे उल्टे चलाये रखती हैं निरन्तर, ताकी जीव ऐसा कोई भी कार्य सीधा न कर सके जिससे उसकी दूरी आनन्द के सागर से कम हो सके । अतः ऐसी दुर्लभ आत्माओं के मार्ग में निरन्तर विघ्न-प्रस्तुत करते रहना उनका सदा का पेशा बना ही रहता है ! जिस गाँव को नानक के पिता इत्यादि भाईयों ने बसाया था, नानक को उसके अपने ही सम्बन्धियों ने गाँव में ही नहीं घुसने दिया और कह दिया ये कुमार्गी है, लोगों को उल्टे रास्ते लगाता है, इसका संग कोई न करे ! इसके हिलने का प्रचार कैसा था "कोई आखे भूतना-कोई कहे बेताला । कोई कहे आदमी नानक बेचारा । भया दिवाना "शाह" का नानक बहुराना ।" कहीं पत्थरों की कहीं जूतियों की

बौछार भुगतनी पड़ी । यही सब बातें शैतानी ताकतें आप जैसों से ही कब करवा लेंगी आप सुपने में भी नहीं जान सकोगे कि कौन ये सब-कब करवा लेगा ? तो क्या आज सब बदल गया है क्या ? भूलते हो, आज पहले से भी कहीं बढ़कर वो सब विभिन्न रूपों में हो रहा है कि जिस की आप सुपने में भी कल्पना ही नहीं कर सकते ! उल्टे मार्ग पर लगाने का एक अंग ये भी है कि नानक के नाम पर जो ये बाजे बजाये जा रहे हैं न, रंग-तमाशा हो रहा है । कभी आप ने सोचा है कौन सा नानक कहाँ बैठा आपके ये रंग-ढंग देख सुन रहा है । तो कोई जवाब किसी के पास नहीं मिलेगा । सब कर रहे हैं हम भी कर रहे हैं बस यही जवाब है । कौन ये सब आप से करवा रहा है ये केवल नानक जैसी कोई दुर्लभ आत्मा ही आप को बता सकेगी, कि कौन सी "शैतानी ताकतें" हैं जो ये सब करवा रही हैं । ऐसी दुर्लभ आत्मा समय-2 पर सृष्टि में रहती ही हैं, परमात्मा के मार्ग दर्शन हेतू । उसका नाम-धर्म कुछ भी हो ही सकता है उससे इस मार्ग दर्शन पर कुछ फर्क नहीं पड़ता, उसका कार्य तो केवल ये बताना रहता है कि आप उस आनन्द के सागर तक कैसे पहुँचोगे, कौन-2 से विघ्न हैं इस मार्ग में, कौन तुम्हारा शत्रु है और कैसे इन सब से निपटा जा सकता है । केवल यहाँ तक ही इन दुर्लभ आत्माओं का कार्य रहता है । जब तक उस प्रभु की रजा रहती है, ये आत्मा बिना किसी स्वार्थ अथवा लोभ के इस कार्य को उस की धुन में मग्न रह कर करती ही रहती

है । कारण जिसके पास "हीरा" हो उसे "कोड़ियों" से क्या "मोह" हो सकता है । विचारणीय विषय है । हीरा जो जड़ अर्थात पत्थर है नाम (प्रकाश केवल जो शब्द (एक प्यारा सा राग केवल) से निरन्तर प्रत्यक्ष होता रहता है । किसी भी लफ़्ज़ का यहाँ कोई भी विचार कल्पना में भी नहीं है "सावधान") जो परम चेतन सत्ता का केवल अपना निज स्वरूप (समर्था) मात्र है। "गुण गोबिंद-नाम-धुन बाणी" गोबिंद अर्थात परमात्मा का एक गुण है जिसे नाम (केवल प्रकाश) कहते हैं और ये नाम (प्रकाश) धुन अर्थात एक प्यारे से राग द्वारा-वाणी अर्थात निरन्तर प्रत्यक्ष होता रहता है । जब कहा जाता है कि एक "नूर" ते सभ जग उपजया, तो सोचो ये बीमारी केवल पैदा करना समस्या नहीं है । प्रत्यक्ष कर के उसे धारण "कौन" करने में कभी कल्पना में भी समर्थ हो सकता है ? सिवाय उस "महामारी" के और "कौन" समर्थ हो सकता है । "नूर" अर्थात प्रकाश केवल नाम की "महामारी" ही इसे धारण करने में हर काल में समर्थ है । इसीलिये कहा है कि ये "महामारी" ही केवल निरन्तर हर काल में जड़-चेतन में भरपूर "लबालब" समाई रहती है । अब विचार करो इस प्रकाश (नाम) को कौन, पाखण्डी दान दे सकता है और कौन विद्वान (महामूर्ख श्रेणी का) इसे सुपने में भी धारण करने में समर्थ हो सकता है, जो नाचने कूदने में लगे हो ! जब-2 ऐसी आत्मायें इस कार्य को अपने मिले समय में करके चली जाती हैं । शैतान उन के "शुद्ध रूहानी ज्ञान"

अथवा मार्ग दर्शन को भुलाने के लिये दूसरी आत्माओं को बताये ज्ञान से उल्टा धन्धा करवाने में निरन्तर प्रेरित करती रहती हैं । बताने वाला (विशेष तौर पर कमाई वाली आत्मा) न रहने के कारण बहुत थोड़े समय में ही सब धन्धे उल्टे चल पड़ते हैं, उस "शुद्ध रूहानी ज्ञान" की कब्र बना कर उसी के ठीक ऊपर अथवा नाक पर ही सब रंग-तमाशा सजाया जाता है । इसी का एक विशेष अंग है, गद्धियाँ इत्यादि मत-धर्मो का प्रत्यक्ष विद्यमान होना । इन मोटे-2 गद्दों पर आसीन भारी-2 बेताज बादशाह केवल इन विरासत में मिली दुकानों को सजाने में अथवा कायम या बढ़ाने में ही ताकत को खर्च करने में ही केवल अपने को परमात्मा स्थापित करते रहते हैं । बिना तप के शब्द की रजा कोई अनुभव करने में कभी भी समर्थ नहीं हो सकता किसी भी काल में इसे निश्चित जानों ! इन बड़े-2 भारी परमात्माओं से प्रबन्ध भी ढंग का हो सकेगा इस शक की हमेशा गुंजाइश बनी ही रहती है, वैसे एक छोटे साधारण से "क्लर्क" बेचारे के लिये तो इम्तिहान पास करना जरूरी है । चार विषयों का ज्ञान जानना आवश्यक है । इंटरव्यू में सभी सभा सदस्यों को संतुष्ट करना जरूरी है । पर मुल्क को चलाने वाला आप का कोई भी अंगूठा छाप विद्वान (महामूर्ख श्रेणी का) हो सकता है । इसमें ताज्जुब का कोई विषय ही नहीं है । केवल हमारा अपना इतिहास ही साक्षी है, केवल विरासत में मिले कुछ साधन होंने चाहियें बस । अर्थात ये गुण अवश्य होना

चाहिये कि कितने कम समय में कितने ज्यादा से ज्यादा लोगों को भ्रम में रखा जा सकता है अथवा मूर्ख बनाया जा सकता है । अब बताओ जो मूर्ख बनें और उन्हें बनाने वाला अपने आप ही "महामूर्ख" अर्थात "इन्चार्ज" हो गया कि नहीं । मनुष्य जाति अथवा मानव शरीर का अधिक मात्रा में हनन करने का साधन प्रत्यक्ष करने वाली दुर्लभ आत्मा स्वाभाविक रूप से अपने प्यारे परमात्मा (केवल शैतानी ताकत) की प्रसन्नता निजी रूप में अवश्य प्राप्त करती ही है । हमारे अपने ये मुल्क (मृत लोक) ही इसकी साक्षी के रूप में प्रत्यक्ष हैं । एक रूह इस कार्य को अकथ मेहनत से सम्पन्न करती है तो वह एक बहुत बड़े राज सत्ता का अधिकारी अथवा बादशाह ही बना दी जाती है, कारण इससे शैतान का ही कार्य तो आसान होता है निश्चित रूप से । अनन्त जोखिमों से भरा जीव-जान हथेली पर लिये-शिक्षा का उत्कृष्ट नमूना रूपी तीनों कमानों के दुर्लभ प्रधान विशेष यदि मूर्खों के इन्चार्ज-अंगूठा छाप मुल्क के बादशाह विशेष को सैल्यूट मारते दिखाई दें तो हैरानी का कोई विषय ही नहीं है इन शैतानी मुल्कों में ! "कूड़ बोल मुरदार खाई - अवरी नो समझावण जाई । मुठा आप मुहाए साथै - नानक ऐसा "आगू" (इन्चार्ज) जापै ।" इस बचन से स्पष्ट है कि ज्यादातर मत-धर्म-गद्दियाँ चलाने वाले आप को इसी श्रेणी के मिलेगें अर्थात जो खुद निजी स्वार्थों (वासनाओं) अथवा लोभों में डूबे हैं, आपको कहाँ से सीधा रास्ता बता देंगे ? इसी का शैतानी

ताकतें फायदा उठाती हैं । इसी कारण इस प्रथा को गोबिंद सिंह नाम की मार्गदर्शक आत्मा ने सदा के लिये समाप्त कर दिया । किसी भी पथ-प्रदर्शक ने जो भी कहना है वो सब परमात्मा ने आप को लिख कर दे दिया है । इसमें "शक" की कोई गुंजाइश नहीं है, न ही आपको धोखा ही हो सकता है । केवल कमाई का विषय है । वो केवल आप ने करनी है, करानी केवल शब्द (केवल रागमई आवाज) अथवा परमात्मा ने है । बीच में दलालों का क्या काम । करतूतें सब आपकी अपनी निजी कमाई अथवा सम्पत्ति है केवल । भुगतनी भी केवल आपने ही है । भुगतान अथवा बख्शना केवल नाम (केवल प्रकाश) अथवा परमात्मा नें ही है, फिर आप खामोशी से इसे क्यों नहीं हजम करते ? क्यों नहीं उस एक अकाल पुरख परमात्मा पर भरोसा रखते ? क्यों इन माँस-खून (वो भी इन्सानी) के प्यासे लोभी खूनी भेड़िये के पीछे अपनी हस्ती निरन्तर मिटाते चले जा रहे हो । इन सब में सूक्ष्म अदृश्य "शैतानी ताकतें" निरन्तर आप के दुर्लभ मानुख जन्म को उल्टे-धन्धों में लगवा कर हज्म करती चली जा रही हैं । वाणी को पढ़ने अथवा केवल सुनने से कुछ लाभ नहीं मिलता, जब भी कुछ बनेगा तो केवल "अमल" से ही होगा । और उसे कभी भी किसी भी काल में अनन्त उपायो से कोई भी बदलने में समर्थ सुपने में भी नहीं हो सकता ! इसीलिये फकीर ने कहा है कि "अमलां उते होन निबेड़े ! खड़िया रहन गीयां जातां...!" "जात" लफज का रूहानी

भाव है मत-धर्म आदि की अपनाई हुई क्रियाएँ । ये सब खड़ी ताली पीटेंगी और "कोई" आप को घसीट कर ले जायेगा । इस समस्या का केवल एक ही उपाय है कि अपने अमल अथवा व्यवहार को सुधार लो, वो भी मरने से पहले अपनी आखिर की उस मुश्किल की घड़ी से बचने के लिये केवल । केवल एक बार इस शरीर से अलग हो जाने पर आप सुधारना भी चाहोगे तो सोचो कैसे सुधार लोगे ! कोई आप को ये कार्य कभी सुपने में भी करने नहीं देगा । और अभी मौका है कुछ प्राप्त करने का तो आप के पास करने को समय ही नहीं है । इस "फालतू के कार्य" के लिये । यकीन जानो तब आप छाती पीटोगे कि "हाय कुछ नहीं किया ।" ताज्जुब है कि सारी उम्र भाग-2 कर दौड़-2 कर करते भी रहे और अब रोते-पीटते हो कि हाय कुछ नहीं किया । यकीन करो सब तरफ यही हो रहा है । "हाहाकार" मचा हुआ है । अन्धी बहरी आत्मा बेचारी ये सब प्रत्यक्ष हो रहा है न देख ही पाती है न सुन ही सकती है । इसीलिये कहा है कि "अवर काज तेरे किते न काम मिल साध-संगत भज "केवल नाम" । इस समस्या का केवल इस नाम (केवल प्रकाश) के सिवा कोई हल सुपने में भी नहीं है । साध अर्थात जो इन्द्रियाँ साध के बैठा है, यानी के उन के स्वादों से ऊपर उठ चुका है । संगत अर्थात ऐसी दुर्लभ आत्मा के मार्ग-दर्शन को अपना, व्यवहारिक रूप से । "भज" का भाव गाना बजाना नहीं है जैसा कि आपने "कीर्तन दरबार" आदि धन्धे

प्रत्यक्ष कर लिये हैं मन अर्थात शैतान के कहने पर । आत्मा की एक ताकत होती है देखने की उसे "निरत्त" कहते हैं । दूसरी ताकत आत्मा की होती है सुनने की उसे "सुरत" कहते हैं । जब आत्मा अपनी इस ताकत को प्रत्यक्ष कर लेती है, तो वह इस नाम (केवल प्रकाश) को देखने लगती है । अब ये प्रकाश (नाम) जिस शब्द (केवल रागमई आवाज) में से निरन्तर प्रत्यक्ष होता है उसे सुनने लगती है । ऐसी अवस्था को ही केवल "भज" अथवा "भजन" करना कहा जाता है । अब सोचो आप कौन सा भजन करने में अपनी हस्ती मिटा रहे हो ? ये भजन आप बिना अभ्यास के कभी सुपने में भी न कर सकोगे जब तक आप का हिसाब (शैतान का जुर्माना) बाकी है, उसका ये काला सा पर्दा दोनों आँखों के पीछे सदा बना ही रहेगा । अभ्यास यहीं दोनों आँखों के पीछे बैठ कर किया जाता है । इसीलिये इसे अनन्त जन्मों का जिन्दगी भर का होम वर्क कहा है क्योंकि आप के अनन्त जन्म मनुष्य के ही हो चुके हैं, जिसमें आप ने अनन्त अच्छी अथवा बुरी करतूतें सुन्दर-2 सी एकत्र कर रखीं हैं । जिस मीठी रस से भरी कारस्तानियों के नज़दीक से गुजरने से भी आज आप को बड़ी मुश्किल जान पड़ती है । ताज्जुब है कि एकत्र करते समय सब साधन अपने आप कैसे जुट गये । आप ने तो केवल मुहर ही लगानी थी वो भी "चालाकी" से किसी ने लगवा ली । फिर आप भी तो पिछली कई पीढ़ियों से यही धन्धा करते आ रहे हो "मुहर"

लगाने का। निपुणता तो आप को विरासत में मिली केवल आप की निजी सम्पत्ति ही है। जैसे-2 आप पिछला हिसाब भुगतोगे और आगे कुछ न बीजने का संकल्प ईमानदारी से व्यवहारिक रूप से साबित करते जाओ, वो "कोई" आप को बक्षता जायेगा और आप ये "दुर्लभ भजन" करने लगोगे। और भजन करते-करते अर्थात इस शब्द (रागमई आवाज केवल) को सुनते-2 और इसमें से आ रहे निरन्तर प्रकाश (नाम) को देखते-2 आप इस शरीर में से निकल कर शैतान के इन तीनों मुल्कों को पार कर जाओगे। जब तक आप केवल जीते जी (आखिरी घड़ी मनुष्य जन्म की) इस कार्य को सम्पन्न नहीं कर लेते, आप इस शैतान के चुंगल अर्थात जन्म-मरण के फंदे से कभी किसी भी काल में करोड़ों यत्न करने के बावजूद भी छूट न पाओगे। अगर कुछ भी बाकी रह गया तो निश्चित समझो आपका जन्म अवश्य होगा ही और फिर उस "मनुष्य जन्म अथवा शरीर" में आप जहाँ तक आप ने पिछले जन्मों में दूरी तय की थी केवल उससे आगे का काम निपटाने में लग जाओगे। याद रखना केवल इसी कार्य को न करने देने के लिये "शैतानी ताकतें" केवल आप के कमाये हुए अच्छे अथवा बुरे कर्मों में प्रत्यक्ष करती रहेंगी विघ्न के रूप में, केवल यही कारण है कि विवेकशील आत्मा इस भेद को जान कर फिर इस जंजाल से छूटने के लिये "एकांत" ढूँढती है, और जब तक उसका ये निजी होमवर्क पूरा नहीं हो जाता, वो छूटने के

लिये निरन्तर तड़पती ही रहती है । कि कहीं "लाईट" न चली जाये अर्थात कहीं पहले शैतान न अपना काम कर जाये । क्योंकि फिर से इस "लाईट" को प्राप्त करने के लिये नौ महीने "घोर नरक" अर्थात गर्भ जून में उल्टा तपना ही पड़ेगा । फिर दूसरा नरक, नियमों का "मास्टर" के डण्डे ज्ञान प्रत्यक्ष करने के लिये । फिर तो एक के बाद एक कई भुगतनें के बाद ही आप वहाँ तक पहुँचोगे, जहाँ तक पीछे छोड़ कर आये थे और लाईट चली गई थी । अब फिर वही खतरा जन्म से ही शुरु हो जाता है "भूत" का कि पता नहीं अब कब फिर से कहीं लाईट न चली जाये । उस बेचारे का भी जरा सोचो जो इस मौके को ताड़ी (ताली) पीटने-नाचने-कूदने-रंग-तमाशे (हैप्पी बॅथ डे) इत्यादि में व्यर्थ खोता चला जा रहा है । और दुनिया होम वर्क करने वाली ईमानदार आत्मा को "तेजा कमला" कहा करती है । जिस ने चौबीस वर्ष लगातार एकांत वास केवल इसी "होमवर्क" को पूरा करने में बिताये । पिछले अनन्त-अकथ जन्मों में किये गये उसके होमवर्क को कौन ब्यान कर सकता है ? और आज केवल बाजा-ढोल पीट कर गा कर ही "तेग बहादुर सिमरिये घर नौ निध आवै धाये ।" तू सोचता है कि इस "शैतान के फंदे" से अपने आप ही आज़ाद हो जायेगा । अनन्त जन्मों के तेरे अनंत हिसाब सब "जादू-मन्तर" से हवा हो जायेंगे । और अपने आप ही चल कर तेरे घर नौ निधियाँ अठारह सिधियाँ जो केवल "शैतानी ताकतों" के अंश

मात्र है, जबरदस्ती तेरे घर में प्रवेश कर घुस कर बैठ जायेंगी। ये सब शैतानी धन्धें के और कुछ भी नहीं है। अभी भी मौका है विचार ले, तुझे भी अपने नाम के साथ केवल "कमला" अर्थात "मूर्ख" अवश्य व्यवहारिक रूप से लिखवाना अर्थात साबित करना ही पड़ेगा। हो सकता है तब शायद "कोई" आप की बात बना दे। और ये कोई इस अकाल पुरख परमात्मा के और कौन हो सकता है, अथवा करने में समर्थ है। "जीवत पितर न मानै कोउ" अर्थात "पितर" बीत गये को कहा जाता है। और सूक्ष्म लोक के देवता गण भी इसमें आते है। जो केवल एक भोगी जून हैं, जो केवल मनुष्य जन्म में कमाये गये पुण्य इत्यादि श्रेणी के कर्मों से ही प्राप्त होती है। जब पुण्य खत्म हो जाते हैं तो आत्मायें इन सूक्ष्म भोगी शरीरों को खो बैठती हैं और फिर से मनुष्य जन्म में आ कर उन्हें "कर्म कमाना" ही पड़ता है। बिना कमाई अथवा पुरुषार्थ के शैतान के इन तीन मुल्कों में भूले से भी किसी को एक सुई अथवा फूटी कोड़ी भी सुपने में भी प्राप्त होनी असम्भव है, निश्चित जानियेगा। एक मुल्क में आप बैठे हो। दूसरा सूक्ष्म शरीर का सूक्ष्म मुल्क अर्थात "स्वर्ग।" तथा तीसरा कारण शरीर का "बैकुण्ठ।" शरीर लफज का केवल एक ही अर्थ है "पिंजरा।" इस अर्थ के लगाते ही सब भाव अपने आप ही प्रत्यक्ष हो जाते हैं, कि तीनों मुल्क एक बहुत बड़े "जेल खाने" के और कुछ भी नहीं हैं। अब सोचो जो स्वंय सूक्ष्म अथवा कारण शरीर अर्थात पिंजरे में स्वयं

कैदी है, जुर्माना केवल अच्छे कर्मों का भुगत रहा है आप का कल्याण अर्थात इस जेलखाने से मुक्त करवाने में कैसे समर्थ हो सकता है-सुपने में भी नहीं हो सकता । बेशक आप को कुछ "मीठा धोखा" देने में हर वक्त समर्थ हो सकता है जब तक उस के अपने पुण्य बाकी हैं । क्योंकि सूक्ष्म अथवा कारण शरीर में बहुत सी समर्था अथवा साधन प्रत्यक्ष हो जाते हैं । यहीं की तपस्वी आत्मायें "शैतानी ताकतों" के अंश लेकर गुप्त रूप से अवतार धारण करती हैं और धर्म-मर्यादा को कायम कर मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाती हैं । स्थिति बिगाड़ती भी गुप्त रूप से शैतानी ताकतें ही हैं और फिर उस बिगड़ी स्थिति को सुधारने का पाखण्ड भी यही शैतानी ताकतें बहुत चालाकी से करके अपने को परमात्मा स्थापित करवाती रहती हैं । अंधा बहरा प्राणी बेचारा इन्हें ही पूजने में अपना कल्याण समझता रहता है । इसीलिये कहा है "ब्रहमा-बिसन-महादेउ त्रै गुण रोगी विचि हउमै कार कमाई" अर्थात ये सब केवल आत्मायें ही हैं जो अपनी कमाई अथवा तप से इन पदों पर आसीन हैं केवल । अब आप कहो कि इन्हें भेद नहीं मालूम, तो जवाब है कि इस का क्या इलाज है कि इन्हें यही कार्य अर्थात परमात्मा बनना ही पसंद है तो क्या किया जा सकता है । और बदले में अपने "तप" की बलि देनी ही पड़ती है ये भी कोई कहने की बात है । और तप के खत्म हो जाने के बाद फिर से कमाई करनी ही पड़ती है । बिना तप के किसी को

कुछ भी सुपने में भी प्राप्त होना असम्भव है, निश्चित जानियेगा। पूरी दुनिया इन्हीं शैतानी ताकतों के विभिन्न रूपों की ही केवल पूजा कर रही है। भ्रम में अपने निश्चित मानुख जन्म को खोती चली जा रही है। अनन्त काल के तप और ध्यान कर के शिव जी महाराज का, जब आप किसी दुर्लभ जन्म में शिव पदवी पर आसीन आत्मा तक पहुँचोगे तो अवश्य अपना सिर पीट लोगे "जपह जाइ संकर सतनामा। होइहि हृदय तुरंत विश्रामा।" क्योंकि वो भी धूनी रमाये मिलेगें इस फिक्र में कि मेरी कुर्सी बरकरार रहे। पर शैतान के इस मुल्क में कुछ भी कभी भी किसी भी काल में "स्थिर" सुपने में भी नहीं है। चार अरब बत्तीस करोड़ साल का "शैतानी ताकतों" का केवल एक दिन मात्र है। चार हजार साल का सतयुग-तीन हजार साल का त्रेता युग-दो हजार साल का द्वापर युग और एक हजार साल का कलियुग है। जिसमें प्रत्येक युग के प्रत्यक्ष होने और गिरने में अलग से समय गणना है। अर्थात चार सौ साल का सतियुग आने में समय लगता है, तो चार सौ साल सतियुग के चार हजार साल बीतने के बाद समय लगता है। इसी तरह से तीन सौ साल त्रेता युग आने में और उसके तीन हजार साल बीतने पर, फिर से तीन सौ साल लगते हैं। इसी तरह से दो सौ साल द्वापर युग आने, से पहले लगते हैं तो दो हज़ार साल द्वापर के बीत जाने पर दो सौ साल पूरी तरह से समाप्त होने में लगते हैं। इसी तरह से एक सौ साल कलियुग

आने से पहले लगता है और एक हजार साल की अपनी अवधि कलियुग के समाप्त होने पर, फिर से एक सौ साल इस युग के पूरी तरह से समाप्त होने में लगते हैं। इस के बाद फिर से सतियुग का आगमन हो जाता है। कुल बारह हज़ार साल लगते हैं केवल एक चौकड़ी युग के व्यतीत होने में। ये साल देव लोक के समय से गिने जाते हैं। अर्थात आप का एक साल यानी के ३६५ दिन देवताओं के केवल "एक अहोरात्र" मात्र ही है। इस तरह के करीब नौ सौ अठानवें (९९८) चौकड़ी युगों का "एक कल्प" कहा जाता है। यही केवल एक कल्प ही शैतानी ताकतों का सिर्फ एक दिन मात्र है। इकत्तर चौकड़ी युगों के योग को "एक मनवन्तर" कहा जाता है और हर मनवन्तर में स्वर्ग लोग में राजा इन्द्र की कुर्सी पर दूसरी आत्मा को आसीन कर दिया जाता है। और एक मनवन्तर की अवधि तक इस कुर्सी पर आसीन रहने वाली आत्मा को कम से कम शैतानी मुल्क के इस मनुष्य जन्म में ही केवल "सौ अश्वमेध" यज्ञों के बराबर तप की कमाई निश्चित रूप से करनी ही पड़ती है। और इस कुर्सी पर बैठने के पश्चात शैतान का उल्टा मीटर घूमने लगता है अर्थात उस आत्मा की कमाई शैतान हजम करने लगता है निरन्तर। ठीक इकत्तर चौकड़ी युग की अवधि समाप्त हो जाने पर उस आत्मा से दिये गये समस्त "विशेष साधन" भोगी शरीर सहित वापस ले लिये जाते हैं और फिर से उस बेचारी आत्मा को इन पदार्थों को केवल प्राप्त करने के लिये

फिर से धूनी रमानी ही पड़ती है अर्थात तप करना ही पड़ता है । इसलिये निश्चित रूप से जान लो कि "तप" को खाने वाले सूक्ष्म अथवा कीड़े का केवल एक ही नाम है "शैतानी ताकतें ।" अब ये तप को कैसे खाता है उसे भी समझो, जब आप उसके इस मुल्क में झूठे सुख प्राप्त करने के लिये उस से "कुछ भी" माँगते हो । इसीलिये कहा है कि इन जेलखानों (मुल्कों) में कभी भी किसी को भी कुछ भी बिना तप अथवा कमाई के सुपने में भी शैतान से प्राप्त होना असम्भव निश्चित समझियेगा । आप अपनी जेलों की मिसाल से ही इसे अच्छी तरह से समझ लो । क्या कैदी को आप बिना कुछ कमाई अथवा साधन के कुछ खाने पहनने देते हो । बाहर से उसे जो कुछ भी प्राप्त होता है वो केवल उसका अपना कमाया हुआ ही साधन होता है । फिर उस में आप "ए-बी-सी" क्लास इत्यादि श्रेणी रखते हो तो सोचो क्या "सी" क्लास वाले कैदी को कभी सुपने में भी, "ए" कलास वाले कैदी को उपलब्ध साधन अथवा सुविधा लेने देते हो। हरगिज नहीं उल्टा उस पर अधिक घड़ी निगरानी अथवा जुर्माना समय-2 पर विभिन्न रूपों में लगाते ही रहते हो, और बेचारे को ये सब भुगतने के लिये मज़बूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से ! अब अपने को "सी" क्लास-सूक्ष्म शरीर को "बी" क्लास (स्वर्ग लोक) कारण शरीर को "ए" क्लास (बैकुंठ) का केवल कैदी ही समझो तो बेहतर रहेगा । इसी को "ए" क्लास को मनुष्य जून "बी" क्लास जानवर-

परिन्दे इत्यादि जूनें तथा "सी" क्लास में सूक्ष्म छुद्र कीट इत्यादि वनस्पति की जूनें समझ लो । सब मिला कर ये निश्चित रूप से समझ लो कि ये एक "बहुत बड़ा भयावना" केवल जेलखाना मात्र ही है । कब और कैसे छूटोगे अभी से सोचना शुरू कर दो । कैदी अपने छूटने के लिये दूसरे श्रेष्ठ कैदी को "पूजे" कब छूटेगा ? जेल खाने में कैदी नाचे-कूदे-बाजे बजाये रंग-तमाशे में अपने कीमती जन्म को व्यर्थ खोये कैसी बढ़िया उत्तम कीमती बुद्धि है "मुबारक हो-मुबारक हो" आप को आप का ये रंग-तमाशो से भरा जेल खाना । अब खुद ही विचार लो शैतानी ताकतों के केवल एक दिन में चौदह "इन्द्र" की कुर्सी (स्वर्ग का बादशाह) पर बैठने वाली आत्माओं के अरमानों का खून कर दिया जाता है । अर्थात उन पर झाड़ू फिर जाता है यानी के बदल दिये जाते हैं । इसीलिये इन पदार्थो के खो जाने की मानसिक बीमारी भूत की तरह कुर्सी पर आसीन होते ही निरन्तर उस आत्मा को चिंतित कर उसके कमाये हुए तप को हजम करती रहती है । कोई भी आत्मा प्राप्त साधन को खोने का दुख कभी सुपने में भी बर्दाश्त नहीं कर सकती । कब अवधि समाप्त हो जायेगी इस का कभी किसी को भी ज्ञान नहीं रहता । उसी वक्त पता चलता है जब सब कुछ लुट चुका होता है । आप अपने को साधन सम्पन्न अवस्था में खड़ा रख कर खुद ही विचार लो, कोई भी अभाव में जाना फिर कभी मर कर भी पसन्द नहीं करेगा । एक श्रेणी पाप कमाने वालों की

यही है अर्थात उपलब्ध को हर ढंग से स्थिर रखना । भूल जाता है कि यहाँ कुछ भी कभी सुपने में भी स्थिर नहीं है । "राम गयो रावन गयो - जा को बहु परिवार । कह नानक "थिर" कुछ नहीं - - सुपने जिउ संसार ।" आप संसार को पकड़ना चाहते हो और ये खुद बेचारा निरन्तर हर पदार्थ प्रत्यक्ष होते ही "निरन्तर खिसकता" अर्थात घटता चला जा रहा है । ऐसे अनन्त इन्द्र आप जब "दिव्य दृष्टि" साधन सम्पन्न अवस्था को प्राप्त कर लेंगें तो हैरान होगें ये देखकर के, कि ये स्वर्ग के बादशाह निकृष्ट कीड़ों की जून में आप जैसों के पैरों तले रोंदें अथवा कुचले जा रहे हैं । इसीलिये कहा है कि "बढ़े भाग मानुष तन पावा । सुर (देवता) दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा । साधन धाम मोच्छ कर द्वारा । पाई न जेहि परलोक संवारा । सो परत्र दुख पावइ । सिर धुन-धुन पछताई । कालहि कर्महि ईस्वरहि मिथ्या दोष लगाइ ।" "इस देही कउ सिमरह देव सो देही भज हर की सेव । भजह गोबिंद भूल मत जाह ।" अर्थात मानुख जन्म देवता को भी दुर्लभ है । क्योंकि वो केवल एक उत्तम साधन सम्पन्न भोगी जून (श्रेष्ठ जेल खाना) मात्र है । और मानुस जन्म भोगी+कर्म की जून है । अर्थात इसी इन्टरनेशनल एयरपोर्ट से सभी मुल्कों को जहाज़ मिलते हैं । अब ये आप का अपना केवल निजी शौक़ है कि आप कौन से जहाज पर सवार हैं । बुद्धि से विचार लें । हर वासना आप को अलग-2 मुल्कों अर्थात केवल जून की सैर करने पर निश्चित रूप से अवश्य मजबूर

कर देगी । इसीलिये कहा है कि "नानक नाम (प्रकाश) जहाज है चढ़े सो उतरै पार ।" अब इसका क्या इलाज है कि नानक को ही सब ने जहाज बना रखा है उसी बेचारे पर चढ़े फिरते हैं । "बेचारा नानक ।" इतने सारे विशेष-2 साधनों सहित सभी उस पर चढ़े बैठे हैं कि बेचारा हिलने को भी दुर्लभ । सभी सामान सहित सब को लेकर कैसे आकाश में उड़ जाये ? फिर सफर भी लम्बा है । सचखण्ड तक रास्ते में कोई इन्तजाम भी नहीं है । रुकने-भोजन इत्यादि का । एक से पूछा कि आपने क्यों इतना सामान (वासनाओं) का साथ बाँध रखा है तो कहने लगे पता नहीं कब किस की जरूरत पड़ जाये । हमें तो वहाँ कोई जानता नहीं फिर भाई माँगने में तो हमारी शान घटती है चाहे थोड़ी सी ही सही । हम शर्मिंदा होना नहीं चाहते । विशेष आप भी जरा जल्दी कीजिये "अगर यहीं रहना चाहते हैं तो" (जेलखाने में), अपने सभी परिवार-सम्बन्धियों तथा विशेष-2 सामान सहित इस बिना टिकट के यात्रा करवाने वाले विशेष "स्पेस-सरल" अर्थात प्यारे रस से भरे "नानक" लफज नाम के दुर्लभ जहाज विशेष पर तुरन्त सवार होने की दुर्लभ कृपालता करें, कहीं ऐसा न हो कि देरी करने से आवश्यक दुर्लभ "फ्लाइट" विशेष ही मिस हो जाये और आप को पीछे हाथ मलना पड़े सभी अपने प्यारे-2 सेवकों सहित । अगर बाजे गाजे तथा नाच कूद कर ये शुभ कार्य किसी "विशेष पत्री-विशेषज्ञ" से शुभ लगन मूर्हत निकलवा कर सम्पन्न विशेष करें तो

निश्चित रूप से आप इस "विशेष नानक" (केवल शैतानी ताकत ही भाव इस विशेष वाक्य में निहित है) की प्रसन्नता आवश्यक रूप से प्राप्त करने में अवश्य पूर्ण समर्थ विशेष हो सकेंगें प्रत्येक काल में निश्चित रूप से ! ये अलग बात है पिछली कई पुश्तों से दुनिया का "हक" अथवा अधिकार हज्म करने का नुस्खा निरन्तर बिना नागा सुबह शाम दूध से लेते आ रहे हैं । कहीं कुछ उगलना न पड़ जाये । विद्वान (मूर्ख श्रेणी के) भूलता है "तू" झाड़ू लगाकर जिस मिट्टी अथवा कूड़े को तू व्यर्थ समझ कर बाहर फेंक देता है न, यकीनी तौर पर निश्चित रूप से समझ ले प्राणी कि इन तीनों मुल्कों की सभी शैतानी ताकतें तुझ सहित उस बाहर फेंके गये मिट्टी अथवा कूड़े के सब से छोटे से "कण" को भी अनन्त काल तक अनन्त प्रयत्न करने के बावजूद कोई भी कभी भी सुपने में भी "हजम" करने में समर्थ न हो सकेगा । क्योंकि तेरी नज़र में केवल व्यर्थ उस छोटे से मिट्टी के कण में भी "उस" की सत्ता भरपूर है । वो केवल उस "एक" के नूर के सिवा कुछ भी नहीं है । क्योंकि उस की नजर में वो केवल व्यर्थ नहीं है, जिस पर तूने आँख बंद कर झाड़ू फेर दिया । "हक पराइआ नानका उस सुअर उस गाइ । गुरू पीर हामा ता भरे - जा मुरदार न खाई । गली भिसत न जाईऐ - छुटै सच कमाई । मारण पाह हराम मह - होई हलाल न जाइ । नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाई ।" "हक पराइआ नानका" अर्थात पराया अधिकार रखना अथवा दबाना ऐसा

है जैसे "उस सुअर उस गाई" यानी के मुसलमान का सुअर को तथा हिन्दू का गाय को खाने के बराबर है । "गुरु पीर हामा ता भरे" अर्थात गुरु तथा पीर तभी जमानत भरते हैं जब तू "मुरदार न खाई" मुर्दे खाना छोड़े पराये हक रूपी निश्चित रूप से । "गली भिसत न जाईये" अर्थात भिसत यानी के स्वर्ग । गली अर्थात दसवें द्वार रूपी मार्ग तक पहुँचना तेरा असम्भव है निश्चित रूप से । "प्रेम गली अत सांकरी - ता में दो न समाहि ।" यानी के इस तंग गली दसवें द्वार में दो का प्रवेश वर्जित अथवा असम्भव है निश्चित रूप से और तू बारात लिये फिरता है, "विशेष-2 बारातियों की !" "छुटै सच कमाई" अर्थात सच यानी के केवल "परम चेतन सत्ता" का व्यापार करने वाली "दुर्लभ सच्चा व्यापारी" ही छूटता है निश्चित रूप से । "मारण पाहि हराम महि होई हलाल न जाई" अर्थात पराया अधिकार रूपी मुर्दे खाने के बाद तू जितने मर्जी दान कर ले या लंगर चला ले, दिन-रात महान-2 ड्यूटियों को निभाते पीढ़ी दर पीढ़ी, कुछ नहीं होने वाला यानी के ये तेरी कमाई को हलाल नहीं होने देंगे, मुर्दे विशेष जिन्हें तू हजम करने का नकली दावा पेश करता है प्रतिदिन सफेदपोश बनकर "धर्मात्मा विशेष ।" "नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाई" अर्थात जैसे गंद की गली में से गुजरने पर गंद से ही जीव भरता है, वैसे ही कूड़ रूपी झूठ विशेष का व्यापर करने वाली दुर्लभ हस्ती को केवल "दुर्लभ घोर-2 पार्कों की सैर" ही विशेष रूप से उपलब्ध होती है, तथा

निकृष्ट भोगी जूनों को अनन्त काल के लिये भोगने पर अवश्य खून के आँसू रोते हुऐ तथा अनन्त दुखों से तड़पते हुऐ मजबूर होना ही पड़ता है निश्चित रूप से । नानक लफज को अलग कर मार्गदर्शक की जगह लिख फिर नाम लफज की जगह केवल प्रकाश लिख फिर अब समझ कि इस प्रकाश (जो रागमयी शब्द अथवा आवाज से निरन्तर प्रत्यक्ष होता रहता है) में एक जादू है "आकर्षण" का । जो मैगनेट में होता है । लोहे को जैसे वो खींच लेता है । वैसे ही ये आत्मा को खींचता है तेजी से । आत्मा इस में समा कर अथवा जुड़ कर या इस पर सवार होकर (सब लफजों का फेर है भाव एक ही है) वहाँ पहुँच जाती है जहाँ से ये जहाज अथवा नाम (प्रकाश) आता है, अर्थात धुर या सचखण्ड यानी के अविनाशी सत्ता केवल इस साधन के सिवा और कोई भी यन्त्र अथवा मदद तेरा कल्याण करने में सदा असमर्थ ही साबित होगी । तो क्या अभी से ये कार्य क्यों नहीं हो रहा ? तो सुन ये शब्द (केवल रागमई आवाज) अपना कार्य हर वक्त निरन्तर बिना तेरे से कुछ लिये कर रहा है । मिसाल से समझ जैसे लोहे पर कुछ वजन रख दें तो क्या मैगनेट काम करना बंद कर देता है, तो नहीं वो अपना कार्य निरन्तर करता है । पर लोहे पर वजन पड़ा है तो, जो उसे वहाँ से खिसकने अथवा जुड़ने नहीं देता । अब जैसे-2 तू वजन कम करेगा तो उसकी तरफ आकर्षित होने लगेगा । अब जैसे ही पूरा वजन हट जायेगा तैसे ही वह तुरन्त

उससे चिपक जायेगा । बस यही बात यहाँ भी है आत्मा रूपी लोहे पर कर्म के फल रूपी वजन अथवा मैल चढ़ी हुई है जैसे-2 ये भुगतान देगी ये वज़न अथवा मैल धुलती जायेगी और बस जैसे ही पूरा भुगतान खत्म होगा, ये फट से इस प्रकाश से जुड़ अथवा चिपक जायेगी । और फिर इसकी जन्मों-2 की प्यास सदा के लिये तृप्त हो जायेगी तथा फिर से कभी भी इस आनन्द के सागर से अलग होना सुपने में भी पसन्द न करेगी । जैसे मैगनेट के आकर्षण का एक अपना निजी दायरा होता है । वैसे ही नियमानुसार ये "प्रकाश" (नाम) भी तुझे केवल पहली बार इस मानव शरीर में ही दोनों आँखों के पीछे खामोश अवस्था में ही मिलेगा । शेष पढ़ाई अंदर की है । "कच्ची जमात" फेल को "एलजबरा" पढ़ाने वाला जरूर निश्चित रूप से अपने को पागलखाने में भरती कराने की तैयारी कर रहा है । ये कार्य अनन्त जन्मों का जिन्दगी भर का ईमानदारी से किया जाने वाला होम वर्क है जो तूने अभी तक शुरू भी नहीं किया फिर खत्म होने का कौन सा विचार सुपने में लिये बैठा है । यहाँ (दसवें द्वार) तक पहुँच फिर तुझे आगे की पढ़ाई भी अवश्य कोई करा ही देगा ! वो "मास्टर" कोई भूला नहीं बैठा है । हर वक्त जड़-चेतन में निरन्तर प्रत्यक्ष है । सिवा उसके इस कुल आलम में और कुछ भी सुपने में भी संभव ही नहीं है । और तू कैदियों (देव लोक) को पूज रहा है । तेरी इस सुन्दर बुद्धि का केवल एक ही उपाय है

"शैतान ।" वो सब पढ़ाने में हर वक्त समर्थ है, शेष कार्य को अवश्य पूरा कर देगा । अभी तू जीवित है । "पितर" श्रेणी से दूर है । तुझे लिख-2 कर समझा रहे हैं पर तू मानता नहीं । जब तू ये दुर्लभ मानुख जन्म खो बैठेगा न तब तेरे पीछे सम्बन्धी तेरे कल्याण के वास्ते "पितरभोज" किया करेंगें । और जादू से तू सब नरकों-निचली निकृष्ट जूनों से छूट कर सीधा गुरु नानक साहब के चरणों में स्वाभाविक रूप से पहुँचा दिया जायेगा । ये चरण कौन से होते हैं, कहाँ कौन लिये बैठा है । तुझे पता होगा या इन ठग अथवा दलालों को जानकारी होगी जो पेट फुलाने और अरदासें करने का खानदानी पेशा बनाये केवल नरकों में अपना नाम पक्का लिखवाने में दुर्लभ मानुख जन्म को व्यर्थ खो रहे हैं । रूप रहित अविनाशी सत्ता को किसी भी भाषा के केवल एक लफज से भी ब्यान करना असम्भव है । तेरी इन समस्त कारस्तानियों का सिवाय "घोर नरकों" के कुछ भी नतीजा निकलने वाला संभव ही नहीं है सुपने में भी । "पितर भी बपुरे कह किउ पावह ।" अब सोच कौन से मुल्क और कौन-2 सी जूनें (पिंजरे) इस भयानक जेलखाने की कौन कहाँ कैद हैं, तू किस जादू से वहाँ उसे साधन पहुँचा देगा । "केवल ठगी के लिये ये धन्धा खूब बढ़िया है ।" जैसी जिसकी कमाई अथवा वासना होती है नियमानुसार "शैतान" उसे वहाँ कैद कर देता है । बार-2 उस पिंजरे में जमो (जन्म लो) और मरो बस यही होता है, जब तक

उस जीव की वो वासना जिसके कारण उसे वो पिंजरा भुगतना पड़ रहा है जड़ से पूरी तरह मिट नहीं जाती। यदि तू इन सम्बन्धों का मोह रखे बैठा है। उन्हें याद कर रहा है "पितर भोज" आदि करके तो निश्चित रूप से समझ ले कि तू भी इन्हीं स्थानों अथवा पिंजरों में अवश्य कैद भुगतेगा, जिन पिंजरों को रोशन करने के लिये ये तेरे पितर अपनी वासनाओं के कारण मजबूर कर दिये गये हैं। इसीलिये कहा है कि "पुत्र-कलत्र मोह सम "बिख" (जहर) है अन्त को बेली नाही।" जहर चाटने पर जैसे इन्सान जिन्दा नहीं बचता इसी तरह आत्मा इन सम्बन्धों के मोह के कारण "आत्मिक मौत" मरती है अर्थात इसके मोह-ममता में फँसी निकृष्ट जूनों में एड़ियाँ रगड़ने पर मजबूर कर दी जाती है इसे निश्चित रूप से तू समझ ले। (जो मुर्दों का शोक मनाते हैं वे मृत संबंधियों के शोक-सागर में सदा के लिये डूब जाते हैं।) एक मिसाल से समझ जब तू घर से चलता है तो तू अपने साथ राशन अथवा सामान क्यों बाँधता है। क्यों नहीं तू अपने संबंधियों से कह देता के खाने के समय थाली परोस कर अथवा जरूरत के समय सामान रख कर अरदास कर दिया करें, अथवा मन्त्र पढ़ दिया करें। सब किताबें बाजार में मिलती है, कुछ खर्च कर और फिर रोज-2 का बोझा ढोने से तू सदा के लिये अपने को मुक्त क्यों नहीं कर लेता। पर तू ऐसा कदापि नहीं करेगा क्योंकि तू जानता है कि ये सब असम्भव है। इन पदार्थों का तुझ तक

पहुँचना असम्भव है । और इनके अभाव में तुझे बहुत दिक्कतों का सामना अवश्य करना पड़ेगा अथवा भूखा-प्यासा तड़पना पड़ेगा । इसीलिये तू बहुत चालाक है सब बन्दोबस्त अपनी प्रसन्नता अथवा संतुष्टि का घर से कर के ही फिर बाहर कदम रखता है । लेकिन उन बेचारे पितरों को तू धोखा देने में लगा है । इसीलिये लिखा है कि "पितर भी बपुरे कह किउ पावह ।" ये तो हम ने भी सुन रखा है कि कोई तैराक अर्थात जो तैरना जानता है किसी दूसरे डूब रहे को बचाने अथवा पार कराने में अवश्य मदद कर सकता है । पर ये तू कौन सा नया इतिहास बनाने में लगा है ("रेत के महल") कि एक डूबा किसी दूसरे डूबे हुऐ को पार करा रहा है । भाई होगी कोई "जादू की नइया" मुबारक है तुझे तेरा तथा तेरे संबंधियों को ये "पत्थर का जहाज" अर्थात तेरा प्यार "पितर भोज ।" क्योंकि इस जहाज को चलाने वाला अर्थात कैप्टन का नाम तू नहीं जानता तो जानकारी के लिये तुझे बता देवें, बिना तेरे से किसी "दमड़ी" की आस किये-वो है तेरा प्यारा परमात्मा "शैतान" केवल । जो दावा पेश कर रहा है कि तुझे तेरे संबंधियों सहित अवश्य इसी जेल खाने के किसी और "बेहतरीन" डिपार्टमेंट में पहुँचा ही देगा । इतनी तो भाई इस तेरे प्यारे "कैप्टन" की गारन्टी-तो हम भी देते हैं । इतनी समर्था तो इसमें अवश्य हर काल में रहती ही है । "कौआ कूकर खाही" अब फकीर ब्यान कर रहे हैं खाने वालों की जमात जो एकत्र हुई है ये अवश्य

इन कौआ अथवा कुत्ता यानी के ऐसी उत्कृष्ट जूनों अथवा पिंजरो या ऐसे "वातानुकूलित डिपार्टमेंटों" की सैर इस आप के सुन्दर सुशील तथा समर्थ कैप्टन द्वारा अवश्य करा ही दी जायेगी इसे आप निश्चित समझिये, इसकी तो भाई हम भी ताकीद कर ही देते हैं । विशेष जानकारी के लिये केवल आप को बता देवें कि परमात्मा के दरबार में सब से "संगीन अपराधी" जो घोषित किया जाता है न उसकी ये परिभाषा है- केवल ध्यान से सुन-की जो खुद तो डूबा हुआ है और दूसरी आत्माओं को डूबने के लिए अन्धा तालाब जिस का नाम "पितर भोज" इत्यादि क्रियाऐं हैं बनाता है, और दुनिया में अपने को गुरू वाला स्थापित करता है अर्थात गुर मुख परिवार वाला कहलाता है । उसके लिये शैतानी ताकतों को विशेष-विशेष हिदायतें भेज दी जाती हैं "दरगाह" से । अब और अधिक मत पूछो भाई, नहीं तो जो इनफारमेशन हम को जिस सम्बन्ध से मिलती है भाई कहीं वो भी बन्द न हो जाये । आप ये जो जिद पर अड़ जाते हैं न यही बात आप की खराब है । भाई चलो थोड़ा सा और बता देते हैं कि परमात्मा जी फरमाते हैं कि भाई ये मुल्क तेरे मनोरंजन के लिये ही तो बनाये हैं । अगर तुझे पसन्द है तो भाई बड़ी खुशी से तू यहां मौज मना, पर सावधान करते हैं कि तू गल्ती से भी और दूसरों को इकट्ठा कर के उनके कान मत भर । अब जब सब यहीं रह जायेगें तो भाई यहाँ (सचखण्ड अविनाशी सत्ता में) राज कौन करेगा । पहले ही से

यहाँ भाई "राज" करने वालों का "अकाल" पड़ा हुआ है अर्थात बहुत कमी है यहाँ केवल मेरे "प्यारों" की ! इसी भेद को अकाल पुरख परमात्मा ने इस वचन में "स्पष्ट-छुपा" कर रखा है । "जे मुहाका घर मुहै - घर मुँह पितरी देई । अगे वस्त सिजाणिये - पित्तरी चोर करेई ।" कहते हैं कि शैतान के दरबार में तेरी चालाकियाँ नहीं चलेंगी, तेरी चोरी पकड़ी ही जायेगी अवश्य (तेरी ही बनाई हुई मशीन) से जब ग्रीन-चैनल पर "अत अधिकार निषेध" पकड़ लेती हैं तो क्या शैतान के पास कुछ नहीं है, सोच जिसे तूने अभी तक सिर्फ देखा भी नहीं और तू समझ कर बैठा है कि जैसे दूसरों को ठग रहा है उसे भी झाँसा दे देगा ! तो भाई तू निश्चित रूप से समझ ले कि तू बहुत बड़े धोखे में है । वो हर समय भूत की तरह से निरन्तर तेरे साथ चिपका हुआ है जिसे तू प्रसन्न करने के लिये निरन्तर अपनी हस्ती मिटाता चला जा रहा है । यानी के तेरा प्यार सुन्दर "मन ।" "मन तो लेखा मंगिये जिन कीता वापार ।" तेरी सारी कारस्तानियाँ पूरी तफ्तीश के साथ ब्यान कर ये अपनी मौजूदगी की "चश्मदीद गवाही" अवश्य दे देगा, इसे तू निश्चित रूप से समझ ले । अब तू कहेगा कि तेरी कमाई मेहनत की है फिर मैं इकट्ठा करता हूँ, तो भाई सुन, इसमें इस कमाई की तो कोई बात सुपने मे भी नहीं है फिर कौन सी है ? तो सुन-यहाँ प्रभु जिक्र करते हैं उस धन की जिसे तूने प्रभु से

प्राप्त किया है अर्थात ये तेरा "प्राण" रूपी धन जो गिनती का तुझे मिला है केवल उसी पर खर्च करने के लिये जिससे ये तुझे प्राप्त हुआ है । "ये दम हीरा-लाल है", गिन-2 गुरू (शब्द-नाम-परमात्मा, केवल-किसी गद्दीधारी इत्यादि का यहाँ ख्याल सुपने में भी नहीं है "सावधान) को सौंप ।" अब तू सोच ये प्राण रोज के 21600 में से तू कितने कहाँ पर खर्च रहा है केवल मिसाल के तौर पर इशारे के रूप में "काम" पर ही विचार कर ले ! शेष सब 21600 की गिनती रोज की कहाँ-2 खर्च की तूने इसे केवल तू ही बेहतर जानता है । प्रभु का विचार ऐसी "चोरी" की तरह ही है केवल । अब तू चोर तो साबित हो ही गया अब नतीजा भी सुन ले, जिन के नाम पर तूने ये सब "पितर भोज" इत्यादि धंधे किये वो भी चोर साबित हो गये । यानी के ये (विशेष) "चोरी" ये तेरे पित्तर भी अपने "दुर्लभ मानुख" जन्म में करते ही रहे । अब करने और कराने वालों का भी फैसला प्रभु का तू जाते-2 सुन ही ले ? "वडिये हथ "दलाल के मुसफी एह करेई ।" मुसफी कहते हैं सौदा अर्थात व्यापार । यानी के जिन को तू बीच में बैठा कर मन्त्र पढ़वाता है अथवा अरदासें करवाता है ना उन्हें प्रभु के दरबार से एक विशेष "सम्मान अथवा मैडल" प्रदान किया जाता है अर्थात उन्हें "दलाल" कहा जाता है और उन के लिये एक विशेष-2 किस्म के वातानुकूलित पार्क सूक्ष्म लोकों के "घोर उत्कृष्ट नरक" हमेशा तैयार रखे जाते हैं । तथा वहाँ उन्हें इन हाथों की कोई आवश्यकता

ही नहीं रहती, अतः उन्हें बिल्कुल शरीर से अलग कर दिया जाता है । ऐसे और भी बहुत से पार्क वहाँ निश्चित रूप से सजे ही रहते हैं केवल इन प्यारे "दलालों" के वास्ते, वहाँ के बारे में फिर कभी आना फुर्सत में तुझे तफ्तीश से ब्यान करेंगें । अब ये और जोड़ दो कि जो ये सब करवाते हैं वो अवश्य उनके आगे रहते ही हैं ये भी कोई कहने की बात है । ये तो प्रभु ने केवल एक इशारा दिया है शेष निकृष्ट सूक्ष्म जूनें अपने आप मुआवजे के रूप में मिलती ही हैं । निश्चित रूप से समझ ले मुबारक हो तुझे तेरा मुसफी ब्यापार । "नानक अगे सो मिले जि खटे घाले देई ।" नानक नाम की आत्मा ब्यान कर रही है कि आगे केवल वही कुछ प्राप्त होता है जो जीते जी कमाया जाता है, ऐसा नहीं है कि करेगा तू, और मिलेगा किसी और को अथवा तेरी जगह कोई दूसरा भुगत लेगा । प्रभु की इस निश्चित प्रेरणा से स्पष्ट हो जाता है कि सब मजमून केवल जीते जी का ही है मरने के बाद तो केवल जुर्माना भरना ही है "केवल ।" एक निश्चित नियम है कि जो आत्मा जीते जी अपना कागज "शैतान के दरबार का जुर्माना" फटवा लेती है अर्थात शब्द (केवल रागमई आवाज) को प्रत्यक्ष कर लेती है अपने "घर" पहुँच जाती है उसके कुल परिवार की समस्त आत्माओं को जो जहाँ-2 नरकों अथवा निकृष्ट योनियों में भटक रही होती हैं अथवा फँसी हुई होती हैं । उन्हें कुछ बक्श कर कुछ भुगतवा कर प्रभु धीरे-2 तरक्की करवा कर मानुख जन्म में लाता

है और फिर उसे उस जगह लाया जाता है जहाँ उसे इस सृष्टि के "निश्चित नियमों" का विशेष ज्ञान देकर कमाई करना बताया जाता है । (विशेषः जहाँ आप को नियमों का ज्ञान प्राप्त न हो तो समझ लो ये तो प्रभु का विशेष स्थान कदापि नहीं हो सकता) न कि अपने साथ चिपकाना । इसके बाद जीव अपने हाथ से केवल अपना स्वंय का इतिहास लिखता है । फल प्रभु का पहले से ही निश्चित रहता ही है उस पर जीव का कोई अधिकार ही नहीं है । "कर-कर करणा लिख लै जाह । आपे बीज आपे ही खाह । नानक हुकमी आवह जाह ।" केवल वही आत्मा इस जेल खाने से अलग की जाती है जो केवल उस "एक" का ही सपना संजो कर के रखती है दूसरी कोई भी आत्मा अगर घसीट कर भी ले जाई जाये तो हिल भी नहीं सकती, क्योंकि रचना ही प्रभु ने ऐसी रची है कि एक भी "सूक्ष्म से वासना" भी जीव को अन्दरूनी मार्ग पर गल्ती से भी पैर नहीं रखने देगी इसे आप निश्चित रूप से समझ लो । किसी की सिफारिश इत्यादि का कोई कल्पना में भी विचार नहीं है । अगर आप की साधारण सी मशीन एक सुई को भी रोकने में हर वक्त समर्थ है, तो उस प्रभु के लिये इन सब बातों का क्या अर्थ रहता है । जिसने आप जैसे उत्कृष्ट नमूने को प्रस्तुत किया ! सभी इतिहासकारों ने दो घटनाओं का जिक्र किया है कि नानक नाम की आत्मा ने मार्ग दर्शन हेतू दुनीचन्द का "पितर भोज" तथा मलिक भागो का "शाही भोज" दोनों भोजों का

बहिष्कार किया और कारण भी वहीं प्रत्यक्ष करके दिखा दिया । शाही भोज में दिखा दिया कि खोटी कमाई से खून (अथवा भुगतान) और ईमानदारी की कमाई में पवित्रता अथवा दूध रहता ही है । अतः पराये अन्न का भोग लगाने से पहले अन्जाम अवश्य सोच ही लेना चाहिये । किस पर यकीन करोगे ? और दुनीचन्द के "पितर भोज" में उन्होंनें दिखा दिया कि जिनके लिये तू ये कर रहा है वो जंगल में भगियाड़ बना बैठा है । इस तक तो तेरा ये शाही भोज का एक फीके अन्न का दाना भी नहीं पहुँचा । एतराज करने पर सब को लेकर वे जंगल में पहुँचे और उन्हें प्रत्यक्ष दिखा दिया । जब वहाँ भी मानने से इन्कार करने लगे तो उन्होंने अपनी "दिव्य समर्था" से आत्मा को उससे अलग किया, जब फिर भी न माने तो उन्होंने आत्मा को रोक कर अपनी समर्था दे कर प्रत्यक्ष बात भी स्पष्ट रूप से करवा दी । आत्मा ने स्पष्ट जवाब दे दिया कि बाहर से मेरी वृति शाकाहारी की ही थी पर अन्दर से माँस का लोभ रहता ही था और संसारिक व्यवहार में प्रत्यक्ष रूप में तो धर्मात्मा ही था, पर अन्दर में हर समय छल-कपट रखता ही था जिस कारण मुझे ये चालाक तथा माँसाहारी तामसिक भगियाड़ की जून बड़े लम्बे समय से भुगतनी पड़ रही थी । केवल इस प्रत्यक्ष "जीवन मुक्त" आत्मा (नानक) के संबंध के कारण मुझे इस तामसिक जून से छुटकारा मिला है और अब मैं फिर "दुर्लभ मानुख" जन्म को इस आत्मा की दया के कारण

प्राप्त कर सकूँगा । अब सोचना है कि इस मिसाल को ध्यान में रख कर कि हम कहाँ पर खड़े अथवा पहुँच चुके हैं । जो आज करते आ रहे हैं उस सब का क्या नतीजा निश्चित (रूप से) अपने हाथ से लिख चुके हैं । बस केवल भुगतने के लिये तैयार रहना चाहिये, और इनका क्या "इलाज" है जो रोज "आसा दी वार" में सुबह रटते हैं, इस "परमात्मा की रजा" को और फिर सारा दिन उसी "वाणी" पर खुद भी थूकते हैं और दूसरों को भी थूकना सिखाते हैं (अर्थात कहे से उल्टा करते हैं और करवाने को उकसाते हैं) वैसे तो इस वाणी को प्रत्यक्ष रूप से मत्था भी लेट कर ही टेकते हैं, चूमते चाटते भी है और बहुत से दिन-रात इसे सैकड़ों बार पढ़ते भी रहते ही हैं, और दसवीं का श्राद्ध नानक जी के नाम का ही कर देते हैं । ऐसे निकृष्ट लोभ में अथवा निजी स्वार्थो के समुद्र में डूबी "खूनी भेड़ियों" की श्रेणी की आत्माओं से जिन्हें प्रभु जी से "दलाल" नाम का सम्मान प्राप्त हो चुका है । और जो बाहर से बकरी नाम की खाल में छुपी बैठी हैं "सदा सावधान" रहना ही मानुख जन्म के लिये श्रेयस्कर अथवा हितकारी है केवल !